इससे उसके मन को असीम शांति मिली। उसके चित्त में प्रसन्नता छा गई। जबकि वह कोई, मंत्र, पूजा, पाठ नहीं कर रहा था। वह समझ गया था परहित ही सबसे बड़ा धर्म है। वह स्वयं में ईश्वर को पा रहा था। उसके सारे, क्लेश, अशांति समाप्त हो चुकी थी। जब तक वह जिन्दा रहा खुदाई में लगा रहा और खुदा का नूर उस पर बरसता रहा।

परहित ही है और कोई साथ न दे तो अकेले चलना चाहिए। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों। कभी न कभी तो तालाब बनेगा और मैं ये करके रहूंगा।''

खुदाई जारी की उसने। उसे दिन-रात मेहनत करते देख गांव के कुछ वृद्धों ने सोचा हमें भी सहयोग करना चाहिए। उन लोगों से जितना बन सका वे मिट्टी को तसले में भरकर फेंकने में उसकी कुछ मदद कर देते। एक दिन एक वृद्ध ग्रामीण ने पूछा- ''साधु महाराज तालाब बन भी गया और पानी न गिरा तो''

उसने उत्तर दिया नहीं गिरा तो अगले साल गिरेगा। उसके अगले साल गिरेगा। जो हमारे हाथ में है वो हम करें। अगर कोई ऊपरवाला है तो कभी न कभी बरसेगा ही। इसके पहले भी तो पानी गिरा है लेकिन जल संरक्षण की व्यवस्था न होने से गांव वाले पलायन करते हैं। यदि पहले से तालाब होता तो पलायन की नौबत नहीं आती।

मई बीता, जून बीता, आधा जुलाई बीत गया। तालाब बहुत गहरा तो नहीं लेकिन फिर भी बन चुका था। जुलाई भी सूखा गया। लेकिन साधु ने अपना कर्म जारी रखा। अब अच्छी खासी खुदाई हो चुकी थी। खुदाई करना उसका काम था। पानी गिराना खुदा का काम था। वह अपना काम कर चुका था। अगस्त लग चुका था। खुदा ने भी अपना काम कर दिया। आसमान में घनघोर घटायें छा गई, बादलों ने बरसना शुरू कर दिया। 24 घंटे लगातार मूसलाधार बारिश हुई। तालाब लबालब भर चुका था। ग्रामीण शहर से वापिस गांव की ओर आना प्रारंभ हो गये। उन्होंने पानी से भरे तालाब का नाम साधु तालाब रख दिया। ग्रामीणों का पलायन बंद हो गया। लेकिन वह साधु पुरूष उस गांव से गायब होकर किसी दूसरे गांव में खुदाई करने लगा था, भीषण गर्मी में। इससे उसके मन को असीम शांति मिली। उसके चित्त में प्रसन्नता छा गई। जबकि वह कोई, मंत्र, पूजा, पाठ नहीं कर रहा था। वह समझ गया था परहित ही सबसे बड़ा धर्म है। वह स्वयं में ईश्वर को पा रहा था। उसके सारे, क्लेश, अशांति समाप्त हो चुकी थी। जब तक वह जिन्दा रहा खुदाई में लगा रहा और खुदा का नूर उस पर बरसता रहा। अपनी पूरी उम्र उसने इसी काम में लगा दी। मृत्यु के बाद भी उसके चेहरे पर आसमानी नूर था। जिन-जिन गांवों में उसने खुदाई अभियान शुरू करके तालाब बनाये । उन-उन गांवों में आज भी लोग उस साधारण पुरूष को असाधारण समझकर उसके नाम का स्मरण करते हैं।

संपर्क करें :
देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कॉलोनी, भरत नगर,
चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.-480001)
मो.न.-9425405022

पानी की गज़ल

धरती मां, सूरज पिता

आज न वट-पीपल रहे, रही न शीतल छांव ।
शहरों जैसे हो गये, अब तो सारे गांव ।।

पर्वत, हिमनद, वन सघन, समझो इन्हें विशेष ।
पूरी दुनिया को यही, 'माणा' का सन्देश ।।

पेड़ों के रोमांच से, उपजाती है नेह ।
हरी-भरी लगती तभी, धरती मां की देह ।।

शुद्ध हवा-पानी मिले, उजली-निर्मल धूप ।
निखरे सारे विश्व में, तब-जीवन का रूप ।।

हरी-भरी लगती धरा, सचमुच सुखद सुरम्य ।
कण-कण में जीवन-भरा, पावन और प्रणम्य ।।

धरती मां, सूरज पिता. हम इनकी सन्तान ।
कर्त्ता-भर्त्ता सब यही, और यही भगवान ।।

इनसे ही गतिशीलता, इनसे सर्दी-धूप ।
इनसे जीवन को मिले, सुन्दर-मोहक रूप ।।

पर्वत, घाटी, वन, नदी, निर्झर की जलधार ।
धरती मां का ये सभी, करते हैं श्रृंगार ।।

सागर सुन्दर पांवड़ा, अम्बर तना वितान ।
जी-भर इन्हें निहारिये, दोनों ही छविमान ।।

सूरज ने पाती लिखी, पुलकित हुआ दिगन्त ।
धरा-देह झंकृत हुई, कण-कण खिला वसन्त ।।

संपर्क करें :
डॉ. रामनिवास 'मानव', डी. लिट्
''अनुकृति'' 706, सैक्टर-13, हिसार-125005 (हरि.), फोन न.-01662-238720

कटते-कटते वन घटे

अग्नि, जल, वायु और धरा, जीवन के आधार ।
इनके ही संयोग से, निर्मित यह संसार ।।

निश्चित है हर तत्त्व का, धरती पर अनुपात ।
इनसे आदमज़ात फिर, करती क्यों उत्पात ।।

नदियां अब नाला बनीं, सूखे सब तालाब ।
लगती बात अतीत की, जन-जीवन की आब ।।

कटते-कटते वन घटे, खेती बंटाढार,
लील रहा हरियालियां, शहरों का विस्तार ।।

प्रदूषण प्रतिपल बढ़े, भस्मासुर-सा आज ।
जलवायु के साथ सकल, दूषित हुआ समाज ।।

दिन-दिन बढ़ती गाड़ियां, दिन-दिन बढ़ता शोर ।
सुख से जीने के लिए, नहीं ठिकाना-ठौर ।।

धूल-धुआं इतना बढ़ा, रूक-रूक जाती सांस ।
अब तो कथित विकास ही, बना गले की फांस ।।

भौतिकता की दौड़ में, आज सभी हलकान ।
कौन जुटाये फिर भला, जीवन का सामान ।।

ज़ारी ऐसे ही रहा, मानव का उत्पात ।
बाढ़ और भूकम्प के, सहने होंगे घात ।।

सम्मुख खड़ी चुनौतियां, जाग अरे इन्सान ।
वरना सब मिट जायेगा, जग से नाम-निशान ।।